हिमकचरी

हिडीचियम स्पाइकेटम की एक प्रजाति

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान
(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद)
पालमपुर–हिमाचल प्रदेश
IHBT

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर ने राष्ट्रीय जैवसंपदा विकास बोर्ड के तत्त्वावधान में *हिडीचियम स्पाइकेटम* की एक प्रजाति हिमकचरी को विकसित किया है। यह पौधा भारत में 1000–2800 मीटर की तुंगता वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। औषधीय गुणों के कारण इस पौधे का अत्याधिक दोहन होता है और यह पौधा अपने प्राकृतिक स्थलों में लुप्तप्राय हो गया है। वर्तमान समय में इसके प्रकन्दों को व्यापार हेतु महत्वपूर्ण माना जाता है। *हि. स्पाईकेटम* के मूल्यवर्द्धित तेल की सगंध तेल एवं औषधि उद्योगों में बहुत माँग है।

भारी माँग और पुनर्जनन क्षमता को देखते हुए *हि. स्पाइकेटम* की मानकित हिमकचरी प्रजाति देश में एक महत्वपूर्ण विकास है, क्योंकि यह इसकी पहली मानकित प्रजाति है।

वानस्पतिक नाम : *हिडीचियम स्पाइकेटम* हैम. एक्स स्मिथ वरायटी. एकुमिनेटम (रोस.) वाल. पर्याय *हि. एकुमिनेटस* रोस. (जिंजिबरेसी कुल)

प्रचलित नाम : कपूर कचरी (हिन्दी) कर्पूरकचली, गंधासाती (संस्कृत) व जिंजर लिली, गारलैंड फ्लावर (अंग्रेजी)। व्यापार में इसका नाम कपूर कचरी, भादग्रन्था, गंधूलिका,

पालाशी, सुब्रता तथा तिब्बती औषधि में इसकी जड़ को पा–द्रक–फे के नाम से जाना जाता है।

वानस्पतिक वर्णन : यह एक बहुवर्षीय, गठीला, 1 मी. ऊँचा, प्रकन्द क्षितिजीय, मूलरूपी, सुगंधित, कपूर की तरह कड़वे स्वाद युक्त पौधा है। पर्ण अवृन्त, विस्तृत–भालाकार, नोक पूंछ की तरह होती है। फूल सफेद, आधार संतरी–लाल, ऊपरी स्पाइक में सुगंधित, पुंकेसर–तंतु लाल होते हैं। बीजकोष गोलाकार, त्रिकोषीय, संतरी–लाल धारियों सहित, बीज आयताकार, काले लाल एरिल सहित होते हैं।

पुष्पण एवं फलन : जुलाई से सितम्बर

उपयोग : इसके निचले भाग (प्रकन्दों) को कई बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसके प्रकंद वातहर, पितहर, कफ निस्सारक, उद्दीपक, आमाशय हेतु स्फूर्तिदायक होते हैं। इसके प्रकंद स्वांगिशोफ, बुरे स्वाद, पेट दर्द, आंत्र–ज्वर, गले के दर्द, अस्थमा, श्वासनली में दर्द, खून साफ करने, आँखों की बीमारी, यकृत रोग, मूत्र समस्या, गैस की समस्या, उल्टी, भारीर में दर्द करने या घाव, गठिया या जलने में उपयोगी है। इसे सत्यादिचूर्ण, सत्यादि कोष, हिमांशु तैल, सत्यादि वर्ग, चंद्रप्रभावटी और अगस्तयारिलाकी रसायन आदि आयुर्वेदिक दवाइयों में प्रयोग में लाया जाता है। यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसे कामोत्तेजक माना जाता है। सांप के काटने पर भी इसके प्रकंद उपयोग में लाए जाते हैं। इसके सूखे प्रकंदों को सुगंध के लिए जलाया जाता है।

जलवायु : हिमकचरी को मध्यम पहाड़ी क्षेत्रों में तथा उपशीतोष्ण जलवायु वाली परिस्थितियों में लगाना उपयोगी है। इसे 1300 मीटर या इससे अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। इसके लिए कुछ छायायुक्त स्थान होना चाहिए।

हिमकचरी में पुष्पण

मिट्टी : हिमकचरी के लिए महीन दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है जिसमें जैविक पदार्थों की उचित मात्रा हो तथा नमी भी हो। मिट्टी का पी.एच. अम्लीय से अनाविष्ट होनी चाहिए।

कृषि पद्धति

खेत की तैयारी : पौध लगाने से पहले खेत की मिट्टी को अच्छी प्रकार से महीन कर लेना चाहिए। खेत को तैयार करते समय अच्छी तरह

हिमकचरी के प्रकंद

से गली गोबर खाद 15 टन प्रति हे. की दर से मिलाना चाहिए।

पौधरोपण : हिमकचरी की फसल को प्रकंदों से तैयार किया जाता है। हिमकचरी को लगाने का उचित समय दिसम्बर से जनवरी है। 3–4 सें.मी. आकार के प्रकंद, जिसमें दो–तीन आँखें हो और भार लगभग 30 ग्राम हो, पौध के लिए उपयुक्त होते हैं। बड़े आकार के प्रकंदों को उचित आकार में काट लेना चाहिए। एक हे. भूमि में 12–13 क्विंटल प्रकंदों की आवश्यकता होती है।

पौध विरलता : इसकी फसल को पंक्तियों में लगाना चाहिए। पंक्ति–से–पंक्ति की दूरी 100 सें.मी. तथा पौधे–से–पौधे की दूरी 25 सें.मी. होनी चाहिए।

खाद : हिमकचरी की उत्तम फसल प्राप्ति के लिए एक हे. भूमि में 30 टन जैविक खाद की आवश्यकता होती है। फसल लगाते समय 15 टन प्रति हे. गोबर की खाद को खेत तैयार करते समय मिट्टी में मिला देना चाहिए। जब पौधे बसन्त–ऋतु में अंकुरित होने लगें, शेष 15 टन को पंक्तियों के साथ–साथ 12–15 सें.मी. गहराई में मिला देना चाहिए। दूसरे वर्ष, गोबर खाद की पूर्ण मात्रा (30 टन प्रति हे.) को 12–15 सें.मी. गहरी भूमि में पंक्तियों से 15 सें.मी. के अन्तराल पर मिला देना चाहिए। जब फसल प्रस्फुटित होने लगे, खाद को भूमि में इस प्रकार मिलाना चाहिए ताकि जड़ों को कोई हानि न हो।

जल प्रबंधन : बताई गई जलवायु परिस्थितियों में फसल को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। फिर भी, यदि जिस भूमि में फसल लगानी है, उसमें नमी की कमी हो तो फसल लगाने के तुरन्त बाद हल्की–सी सिंचाई करनी चाहिए। जिन क्षेत्रों में वर्षा अधिक होती हो वहाँ पर इस फसल को जलाक्रांत से बचाना चाहिए।

हिमकचरी के पके फल

अंतःकृषि : प्रकंदों के प्रस्फुटन के 45 दिनों के भीतर हाथों से हल्की गुड़ाई करके खर–पतवार को बाहर निकाल देना चाहिए। यदि आवश्यकता हो तो पहली निकासी के 20–25 दिनों बाद पुनः खर–पतवार को निकाल देना चाहिए।

कटाई : फसल को 2 वर्ष बाद खोदा जाता है। मध्यम पहाड़ियों में यह फसल नवम्बर–दिसम्बर के दौरान सुषुप्तावस्था में होती है। फसल को सुषुप्तावस्था के दौरान सर्दियों में खोदना चाहिए। यदि पत्ते पीले हो जाएं तो समझिए फसल काटने के लिए तैयार है। इस दशा में सूखे पर्णसमूहों को खेत में ही बिल्कुल नीचे से काटना चाहिए। प्रकंदों को 20–25 दिनों तक भूमि में ही रहने देना चाहिए ताकि वे पूरी तरह से तैयार हो जाए और अंत में प्रकंदों को हाथों से निकालना चाहिए।

सामाजिक वानिकी में हिमकचरी की अंत:–फसल

उपज : फसल लगाने के दो वर्ष के उपरान्त 'हिमकचरी' के ताजे प्रकंदों की अनुमानित फसल 12 टन प्रति हे. होती है। प्रकंदों को ठंडे और अंधेरे स्थान पर रखना चाहिए जब तक कि इनको प्रक्रमित न किया जाए।

आर्थिकी : एक हे. में इस फसल को लगाने के लिए 50,000 से 60,000 रुपये खर्च आता है तथा एक हे. से शुद्ध आय 60,000 रु. आती है।

तेल उत्पादन : जल आसवन द्वारा हिमकचरी मे 0.5 प्रतिशत तेल निकलता है। इस प्रकार एक हे. से निकाली गई फसल से लगभग 60 कि.ग्रा. तेल निकलता है। विलायक प्रक्रमण द्वारा हिमकचरी से 2.3 प्रतिशत तेल की प्राप्ति होती है।

छाया प्रबंधन : हिमकचरी को आंशिक प्राकृतिक छाया में लगाया जा सकता है। इसी प्रकार कृषि वानिकी और सामाजिक वानिकी के साथ भी इसे लगाया जा सकता है।

कृषि तकनीक एवं संपादन :

जैवविविधता प्रभाग

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

डा. परमवीर सिंह आहूजा

निदेशक

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान

(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्)

पोस्ट बॉक्स सं. 6, पालमपुर–हिमाचल प्रदेश

दूरभाष 01894:230411 फैक्स 230433

Email: director@ihbt.res.in

Website: http://www.ihbt.res.in

(आई.एस.ओ. 9001:2000 प्रमाणित संस्थान)

Designed & Printed at : Azad Offset Printers (P) Ltd., 144, Press Site, Ind. Area-1, Chandigarh (0172) 2652349, 2654411, 2651316